Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mol

लांगूलास्त्र शत्रुंजय हनुमत्स्तोत्रम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

'शिव' ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्क - ६

हनुमत्कवच-स्तोत्र-अष्टकादिसहितं

लांगूलास्त्रशत्रुञ्जयहनुमत्स्तोत्रम्

'शिवदत्ती' भाषाटीकासहितम्

*

सम्पादक :

व्याकरणाचार्य–साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकर-

आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री

(प्रादेशिक सरकार द्वारा सम्मानित)

*

प्रकाशक :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

[मूल्य ८/-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

प्रकाशक :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली , वाराणसी-१

फोन : **2392543, 2392471**

पंचम संस्करण : १९९९

मूल्य : ८/- रुपये

मुद्रक :

भारत प्रेस

कचौड़ीगली , वाराणसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक हनुमत्-स्नेही भक्तों के लिए लिखी गयी है। इसमें विनियोग, करन्यास, हृदयादिन्यास और ध्यान के साथ हनुमत्-शत्रुञ्जयस्तोत्र, हनुमत्-कवच, हनुमत्-अष्टक, सङ्कष्टमोचनस्तोत्र, हनुमत्स्तुति तथा हनुमत्-वडवानल स्तोत्र आदि का संग्रह है। इसके विश्वासपूर्वक श्रद्धा-भक्ति से पाठ करने वाले हनुमद्-भक्तों को, कैसा भी प्रबलतम शत्रु क्यों न हो, उस पर विजय तथा सभी अभीष्ट सिद्ध होता है, इसमें संशय नहीं।

ठीक इसी शैली से हनुमद्-रहस्य भी 'शिव' ग्रन्थमाला से प्रकाशित है, जिसमें हिन्दी टीका के साथ हनुमत्पद्धति, पटलपद्धति, स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम एवं हनुमदुपासना-सम्बन्धी सभी विषय दिये गये हैं। हनुमान्‌जी के उपासकों के लिए यह पुस्तक अवश्य पठनीय एवं संग्रहणीय है।

अक्षय तृतीया
२ मई, १९९५
वाराणसी

शिवदत्त मिश्र शास्त्री
सी.के. ५/२६ए.
भिखारीदास लेन, वाराणसी -१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

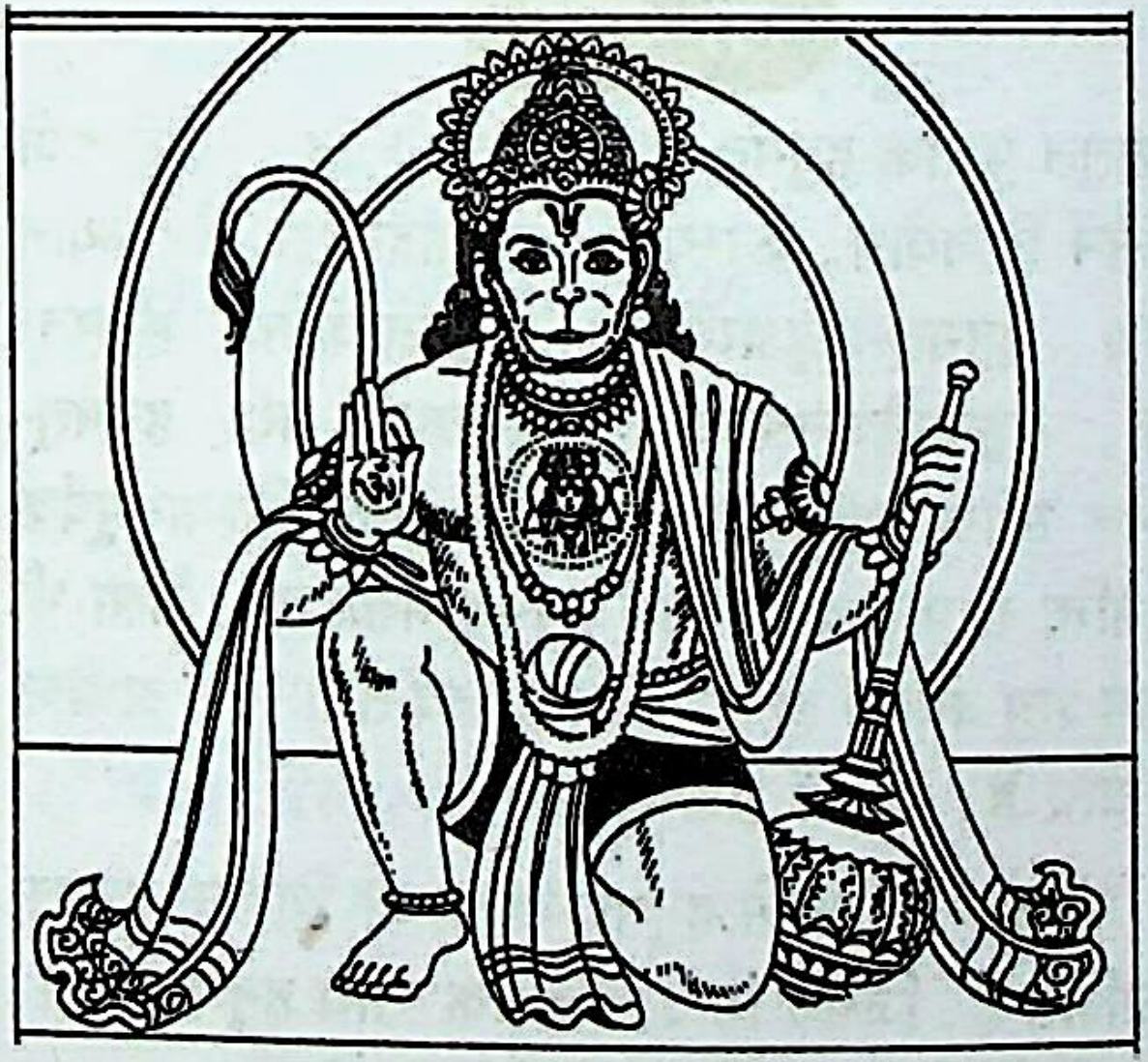

ध्यानम्

मनोजवं मारुत - तुल्य - वेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्टम् ।
वातात्मजं वानरयूथ-मुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रि-संस्कृतं

लांगूलास्त्रशत्रुञ्जय-

हनुमत्स्तोत्रम्

'शिवदत्ती' भाषाटीकासहितम्

हनुमन्तं महावीरं वायुतुल्य-पराक्रमम्।
मम कार्यार्थमागच्छ प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥ १ ॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीहनुमच्छत्रुञ्जयस्तोत्रमाला-

'शिवदत्ती' भाषाटीका

वायु के समान पराक्रमी, महाबली हनुमान्‌जी को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ, और प्रार्थना करता हूँ कि मेरे कार्य के लिए आप आइए ॥ १ ॥

विनियोग– दाहिने हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

मन्त्रस्य श्रीरामचन्द्रऋषिः, नानाच्छन्दांसि, श्रीमन्महावीरो हनुमान् देवता, मारुतात्मज इति ह्सौं बीजम्, अञ्जनीसूनुरिति ह्फ्रें शक्तिः, ॐ हाहाहा इति कीलकम्, श्रीरामभक्त इति हां प्राणः, श्रीराम-लक्ष्मणानन्दकर इति हां हीं हूं जीवः, ममाऽरातिपराजय-निमित्त-शत्रुञ्जयस्तोत्र-माला-मन्त्रजपे विनियोगः ।

करन्यासः

ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें

श्रीहनुमच्छत्रुञ्जयस्तोत्र - मालामन्त्रस्य' से आरम्भ कर, 'मालामन्त्रजपे विनियोगः' तक मन्त्र पढ़कर जल छोड़ना चाहिए ।

करन्यास- 'ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं ... अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' मन्त्र पढ़कर दोनों हाथ की तर्जनी अँगुलियों से दोनों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ह्सौं नमो हनुमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौं राम-दूताय तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौं लक्ष्मणप्राण-दात्रे मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौं अञ्जनीसूनवे अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं

अँगूठों को स्पर्श करे। 'ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं . . . तर्जनीभ्यां नमः' से दोनों हाथ के अँगूठों से दोनों तर्जनी अँगुलियों को स्पर्श करे । 'ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं . . . . . मध्यमाभ्यां नमः' मन्त्र से दोनों हाथ के अँगूठों से मध्यमा अँगुलियों को छुए। 'ॐ ऐं श्रीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौं सीताशोकविनाशनाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौं लङ्काप्रासादभञ्जनाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हां हीं हूं ' ' 'अनामिकाभ्यां नमः' इस मन्त्र से दोनों हाथ की अनामिका अँगुलियों का स्पर्श करे। 'ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं ' ' 'कनिष्ठिकाभ्यां नमः' पढ़कर दोनों हाथ की कानी अँगुलियों को छुए। 'ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं ' ' 'करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः' मन्त्र पढ़कर दोनों हथेलियों और उनके पृष्ठभागों का स्पर्श करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं नमो हनुमते हृदयाय नमः। ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं रामदूताय शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं लक्ष्मणप्राणदात्रे शिखायै वषट्। ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें

हृदयादिन्यास–'ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं ... हृदयाय नमः' इस मन्त्र से दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से हृदय का स्पर्श करे। 'ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं ..... शिरसे स्वाहा' से सिर का स्पर्श करे। 'ॐ ऐं श्रीं ... शिखायै वषट्' से शिखा का स्पर्श, 'ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं ... कवचाय हुम्' से दाहिने हाथ से बाँयें कन्धे और बाँयें हाथ से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौं अञ्जनीसूनवे कवचाय हुम्।
ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौं सीताशोकविनाशनाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौं लङ्काप्रासाद-भञ्जनाय अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ध्यायेद् बाल-दिवाकर-द्युतिनिभं देवारि-दर्पापहं देवेन्द्र-प्रमुखैः प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा।

दाहिने कन्धे का स्पर्श करना चाहिए। 'ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं..... नेत्रत्रयाय वौषट्' से दाहिने हाथ की अँगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों का स्पर्श करे और 'ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं..... अस्त्राय फट्' इस मन्त्र से दोनों हाथ के अँगूठों को चिटका देना चाहिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सुग्रीवादि-समस्त-वानरयुतं सुव्यक्त-तत्त्वप्रियं
संरक्तारुण-लोचनं पवनजं पीताम्बरालङ्कृतम्॥१॥
मनोजवं मारुत-तुल्य-वेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥२॥
वज्राङ्गं पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम्।
नियुद्धमुपसङ्कल्प-पारावार-पराक्रमम् ॥३॥
गदायुक्तं वामहस्तं पाशहस्तं कमण्डलुम्।
उद्यद्-दक्षिण-दोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तयेत्॥४॥

ध्यान–'ध्यायेद् बाल-दिवाकर०' से लेकर 'हनुमन्तं विचिन्तयेत्' तक ध्यान के चार श्लोक पढ़कर श्रीहनुमान्‌जी का ध्यान करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

इति ध्यात्वा, 'अरे मल्ल चटख' इत्युच्चारणेऽथवा 'तोडरमल्ल चटख' इत्युच्चारणे कपिमुद्रां' प्रदर्शयेत्।

इस प्रकार हनुमान्‌जी का ध्यान कर, 'अरे मल्ल चटख' ऐसा पढ़कर अथवा 'तोडरमल्ल चटख' इसका उच्चारण कर श्रीहनुमान्‌जी को कपिमुद्रा दिखावे।

---

१. वानरी (कपि) मुद्रा—

वानरी चाऽस्ति मुद्रेयं तां शृणुष्व वदाम्यहम् ।
करौ सम्पुटितौ कृत्वा समश्लिष्टाऽङ्गुली स्फुटा ॥
तर्जन्यश्चाऽङ्गुलीमूले कृत्वा द्वयङ्गुष्ठयोरपि ।
अङ्गुल्यः पाणयोः सर्वा अन्तर्गर्भस्थिरा कुरु ॥
हृदयोपरि स्थितास्तास्तु मुकुलाकृतिसंयुताः ।
स्वामिपादे स्थिरा दृष्टिर्मुद्रा स्याच्च स्थिराऽपि तु ॥
(ज्ञेयेयं वानरी मुद्रा चैका मन्त्रपथे ध्रुवा ।)

—ह० पं०, श्लोक १४२-१४५, पृ० १४८

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मालामन्त्रः

ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्फ्रें ह्स्त्रौं नमो हनुमते त्रैलोक्याक्रमण-पराक्रम-श्रीरामभक्त! मम परस्य च सर्वशत्रून् चतुर्वर्णसम्भवान् पुं-स्त्री-नपुंसकान् भूत-भविष्यद्-वर्तमानान् नानादूरस्थ-समीपस्थान् नाना-नामधेयान् नानासङ्करजातिजान् कलत्र-पुत्र-मित्र-भृत्य-बन्धुसुहृत्-समेतान् प्रभुशक्ति-सहितान् धन-धान्यादि-सम्पत्तियुतान् राज्ञो राजपुत्रसेवकान् मन्त्रि-सचिव-सखीन् आत्यन्तिकक्षणेन त्वरया एतद्-दिनावधि-नानोपायैर्मारय मारय शस्त्रैश्छेदय

मालामन्त्र— 'ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं' से लेकर 'उच्चाटय उच्चाटय हुँ फट् स्वाहा' तक माला मन्त्र है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

छेदय अग्निना ज्वालय ज्वालय दाहय दाहय अक्षयकुमारवत् पादतलाक्रमणेनाऽनेन शिलातले आत्रोटय आत्रोटय घातय घातय वध वध भूतसङ्घैः सह भक्षय भक्षय क्रुद्धचेतसा नखैर्विदारय विदारय देशादस्मादुच्चाटय उच्चाटय पिशाचवत् भ्रंशय भ्रंशय भ्रामय भ्रामय भयातुरान् विसंज्ञान् सद्यः कुरु कुरु भस्मीभूतान् उद्धूलय उद्धूलय भक्तजनवत्सल ! सीताशोकापहारक ! सर्वत्र माम् एनं च रक्ष रक्ष हाहाहा हुंहुंहुं घेघेघे हुँ फट् स्वाहा ॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ॐ नमो भगवते हनुमते महाबलपराक्रमाय महाविपत्ति-निवारकाय भक्तजनमनःकामना-कल्पद्रुमाय दुष्टजन-मनोरथ-स्तम्भनाय प्रभञ्जन-प्राणप्रियाय स्वाहा ॐ ह्रांह्रींह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः मम शत्रून् शूलेन छेदय छेदय अग्निना ज्वालय ज्वालय दाहय दाहय उच्चाटय उच्चाटय हुँ फट् स्वाहा॥२॥

इति मालामन्त्रः ।

*

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

शत्रुंजयहनुमत्स्तोत्रम्

*

श्रीमन्तं हनुमन्त-मार्तरिपुभृद्भूभृत्तरुभ्राजितं
चाल्पद्-बालधिबन्धवैरिनिचयं चामीकराद्रिप्रथम् ।
अष्टौ रक्त-पिशङ्ग-नेत्र-नलिनं भ्रूभङ्गमङ्ग-स्फुरत्
प्रोद्यच्चण्ड-मयूख-मण्डल-मुखं दुःखापहं दुःखिनाम्॥

पश्चात् एकाग्र चित्त होकर 'श्रीमन्तं हनुमन्त-मार्तरिपुभृद्०' [श्लोक १] से लेकर 'प्रमोदते मारुतजप्रसादात्' [श्लोक २५] तक शत्रुंजयस्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

कौपीनं कटिसूत्र-मौञ्ज्यजिनयुग्देहं विदेहात्मजा
प्राणाधीश पदारविन्दनिरतं स्वान्तं कृतान्तं द्विषाम्।
ध्यात्वैवं समराङ्गणस्थितमथानीय स्व-हृत्पङ्कजे
सम्पूज्या-ऽखिल-पूजनोक्त-विधिना
सम्प्रार्थयेत् प्रार्थितम् ॥२॥

हनुमन्नञ्जनीसूनो ! महाबलपराक्रम !
लोललाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥३॥

मर्कटाधिप! मार्तण्ड-मण्डल-ग्रास-कारक !
लोललाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥४॥

अक्षयन्नपि पिङ्गाक्ष! क्षितिशोकक्षयङ्कर !
लोललाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-M

रुद्रावतार ! संसार-दुःख-भारापहारक !
लोललाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥६॥
श्रीराम-चरणाम्भोज-मधुपायत-मानस !
लोललाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥७॥
बालि-कोदरद-क्लान्त-सुग्रीवोन्मोचनप्रभो !
लोललाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥८॥
सीता-विरह-वारीश-मग्न-सीतेशतारक !
लोललाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥९॥
रक्षोराज-प्रतापाऽग्नि-दह्यमान-जगद्वन !
लोललाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥१०॥
ग्रस्ताऽशेष-जगत्-स्वास्थ्य-राक्षसाम्भोधिमन्दर !
लोललाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥११॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पुच्छ-गुच्छ-स्फुरद्-भूमि-जगद्-दग्धारिपत्तन!
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥१२॥

जगन्मनो-दुरुल्लंघ्य-पारावार-विलङ्घन !
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥१३॥

स्मृतमात्र-समस्तेष्टपूरक! प्रणतप्रिय !
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥१४॥

रात्रिञ्चर-चमूराशि-कर्तनैक-विकर्तन !
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥१५॥

जानकी-जानकीज्यानि-प्रेमपात्र! परन्तप !
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥१६॥

भीमादिक-महावीर-वीरवेशावतारक !
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥१७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

वैदेही-विरहक्लान्त-रामरोषैक-विग्रह !
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥१८॥
वज्राङ्गनख-दंष्ट्रेश! वज्रिवज्रावगुण्ठन !
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥१९॥
अखर्व-गर्व-गन्धर्व-पर्वतोद्भेदन-स्वर !
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥२०॥
लक्ष्मणप्राण-सन्त्राण-त्राता तीक्ष्णकरान्वय !
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीनं निपातय॥२१॥
रामाधिविप्रयोगार्त भरताद्यार्तिनाशन !
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥२२॥
द्रोणाचल-समुत्क्षेप-समुत्क्षिप्तारि-वैभव !
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥२३॥
सीताशीर्वाद-सम्पन्न! समस्ताऽवयवाक्षत!
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय॥२४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

इत्येवमश्वत्थ-तलोपविष्टः
शत्रुञ्जयं नाम पठेत् स्वयं यः।
स शीघ्रमेवास्त-समस्त-शत्रुः
प्रमोदते मारुतज-प्रसादात् ॥२५॥

इति आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिसंस्कृतं 'शिवदत्ती' भाषाटीकासहितं च लाङ्गूलास्त्र-शत्रुञ्जय-हनुमत्स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

श्रीहनुमत्कवचम्

विनियोगः

अस्य श्रीहनुमत्कवचस्य श्रीरामचन्द्र-ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीहनुमान् देवता, मारुतात्मजेति बीजम्, अञ्जनीसूनुरिति शक्तिः, आत्मनः सकलकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यासः

ॐ हनुमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। पवनात्मजाय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ अक्षपद्माय

विनियोग– हाथ में जल लेकर, 'अस्य श्रीहनुमत्कवचस्य–' से 'जपे विनियोगः' तक पढ़कर जल को किसी पात्र में अथवा भूमि पर छोड़ देना चाहिए।

करन्यास– 'ॐ हनुमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इस मन्त्र से दोनों हाथ के अँगूठे का स्पर्श करे। 'पवनात्मजाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding JKS-M

मध्यमाभ्यां नमः । विष्णुभक्ताय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ लङ्काविदाहकाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीरामकिङ्कराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

तर्जनीभ्यां नम' से दोनों हाथ की तर्जनी अँगुली का, 'ॐ अक्षपद्माय मध्यमाभ्यां नमः' से दोनों हाथ की मध्यमा अँगुली का, 'विष्णुभक्ताय अनामिकाभ्यां नमः' से दोनों हाथ की अनामिका अँगुली का और 'ॐ लङ्काविदाहकाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः' से दोनों हाथ की कानी अँगुलियों का स्पर्श करे। 'ॐ रामकिङ्कराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः' मन्त्र पढ़कर दोनों हाथ के तलवे का स्पर्श करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-M

ध्यानम्

ध्यायेद् बालदिवाकर-द्युतिनिभं देवारि-दर्पापहं
देवेन्द्र-प्रमुखैः प्रशस्त-यशसं देदीप्यमानं रुचा।
सुग्रीवादि-समस्त-वानरयुतं सुव्यक्त-तत्त्व-प्रियं
संरक्ताऽरुण-लोचनं पवनजं पीताम्बरालङ्कृतम्॥ १॥
वज्राङ्गं पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्ण-कुण्डल-मण्डितम्।
नियुद्धमुपसंक्रम्य पारावार-पराक्रमम्॥ २॥
वामहस्ते गदायुक्तं पाशहस्तं कमण्डलुम्।
ऊर्ध्व-दक्षिण-दोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तयेत्॥ ३॥

ध्यान– इसके बाद 'ध्यायेद् बालदिवाकर-द्युतिनिभं–' से 'मुखाम्बुजहरिं भजेत्' तक चार श्लोक पढ़कर श्रीहनुमानजी का ध्यान करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

स्फटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम्।
कुण्डलद्वय-संशोभि-मुखाम्बुजहरिं भजेत् ॥४॥

कवचम्

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः।
पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः पातु सागरपारगः॥५॥
उदीच्यामूर्द्ध्वगः पातु केसरीप्रियनन्दनः ।
अधस्ताद् विष्णुभक्तश्च पातु मध्ये च पावनिः॥६॥
अवान्तरदिशः पातु सीता-शोक-विनाशनः।
लङ्काविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तर॥७॥

तत्पश्चात् 'हनुमान् पूर्वतः पातु०' (श्लोक ५) से 'समीरात्मजः' (श्लोक २१) पर्यन्त हनुमत्कवच का पाठ करना चाहिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

सुग्रीव-सचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः।
भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम्॥८॥
नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः।
कपोलौ कर्णमूले च पातु श्रीरामकिङ्करः॥९॥
नासाग्रमञ्जनीसूनुः पातु वक्त्रं कपीश्वरः।
पातु कण्ठं च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः॥१०॥
भुजौ पातु महातेजाः करौ तु चरणायुधः।
नखान् नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः॥११॥
वक्षौ मुद्रापहारी च पार्श्वे पातु भुजायुधः।
लङ्का-विभञ्जकः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम्॥१२॥
नाभिं च रामदूतश्च कटिं पात्वनिलात्मजः।
गुह्यं पातु कपीशस्तु गुल्फौ पातु महाबलः॥१३॥
अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः।
अङ्गान्यमित-सत्त्वाढ्यः पातु पादाङ्गुलीः सदा॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान् ॥१४॥
हनुमत्कवचं यस्तु पठेद् विद्वान् विचक्षणः।
स एव पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥१५॥
त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं पुनः।
सर्वारिष्टं क्षणे जित्वा स पुमान् श्रियमाप्नुयात्॥१६॥
अर्धरात्रौ जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद् यदि।
क्षयाऽपस्मार-कुष्ठादि-तापज्वर-निवारणम् ॥१७॥
अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान् ।
स एव जयमाप्नोति संग्रामेष्वभयं तथा ॥१८॥
यः करे धारयेन्नित्यं सर्वान् कामानवाप्नुयात् ।
लिखित्वा पूजयेद् यस्तु तस्य ग्रहभयं हरेत् ॥१९॥
कारागृहे प्रयाणे च संग्रामे देशविप्लवे ।
यः पठेद् हनुमत्कवचं तस्य नास्ति भयं तथा ॥२०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by IKS-M

यो वारां निधिमल्प-पल्वलमिवो-
ल्लङ्घ्य प्रतापान्वितो
वैदेही-घन-ताप-शोकहरणो
वैकुण्ठभक्तप्रियः ।
अक्षाद्यर्जित-राक्षसेश्वर-महा-
दर्पापहारी रणे ।
सोऽयं वानरपुङ्गवोऽवतु सदा
चाऽस्मान् समीरात्मजः ॥२१॥

इति श्रीब्रह्माण्डपुराणेऽगस्त्य-नारदसंवादे श्रीरामचन्द्रप्रोक्तं पण्डितश्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिसंस्कृतं भाषाटीकासहितं च हनुमत्कवचं सम्पूर्णम्।

* * *

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

हनुमदष्टकस्तोत्रम्

श्रीरघुराज-पदाब्ज-निकेतन !
पङ्कजलोचन ! मङ्गलराशे !
चण्डमहाभुजदण्डसुरारि-
विखण्डनपण्डित ! पाहि दयालो !
पातकिनं च समुद्धर मां
महतां हि सतामपि मानमुदारं
त्वां भजतो मम देहि दयाघन !
हे हनुमत् ! स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥१
संसृतिताप-महानलदग्ध-
तनूरुहमर्म-तनोरतिवेलं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

पुत्र-धन-स्वजनात्म-गृहादिषु
सक्तमतेरतिकिल्बिषमूर्तेः ।
केनचिदप्यमलेन पुराकृत-
पुण्य-सुपुञ्जलवेन विभो वै
त्वां भजतो मम देहि दयाघन !
हे हनुमत् ! स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ २ ॥

संसृतिकूप-मनल्पमघोरनि-
दाघ-निदानमजस्रमशेषं
प्राप्य सुदुःख-सहस्रभुजङ्ग-
विषैकसमाकुल-सर्वतनोर्मे ।
घोरमहाकृपणापदमेव
गतस्य हरे पतितस्य भवाब्धौ
त्वां भजतो मम देहि दयाघन !
हे हनुमत् ! स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

संसृतिसिन्धु-विशाल-कराल-
महाबलकाल-झषग्रसनार्तं
व्यग्र-समग्रधियं कृपणं च
महामद-नक्र-सुचक्र-हृतासुम्।
काल-महारसनोर्मि-निपीडित-
मुद्धर दीनमनन्यगतिं मां
त्वां भजतो मम देहि दयाघन !
हे हनुमत् स्वपदाम्बुजदास्यम्।४।
संसृतिघोर-महागहनेचर-
तो मणिरञ्जित-पुण्य-सुमूर्तेः
मन्मथभीकर-घोरमहोग्र-
मृगप्रवरार्दित-गात्रसुसन्धेः ।
मत्सरताग्र-विशेषनिपीडित-
बाह्यमतेश्च कथञ्चिदमेयं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

त्वां भजतो मम देहि दयाघन !
हे हनुमत् ! स्वपदाम्बुजदास्यम्। ५।

संसृतिवृक्ष-मनेकशताघ-
निदानमनन्त-विकर्मसुशाखं
दुःखफलं करणादिपताश-
मनङ्ग-सुपुष्पमचिन्त्य-सुमूलम्।
तं ह्यधिरुह्य हरे पतितं
शरणागतमेव विमोचय मूढं
त्वां भजतो मम देहि दयाघन !
हे हनुमत् ! स्वपदाम्बुजदास्यम्। ६।

संसृतिपन्नग-वक्रभयं
करदंष्ट्र-महाविषदग्ध-शरीरं
प्राणविनिर्गम-भीतिसमाकुल-
मन्धमनाथमतीव विषण्णम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

मोहमहाकुहरे पतितं
दययोद्धर मामजितेन्द्रियकामं
त्वां भजतो मम देहि दयाघन !
हे हनुमत्! स्वपदाम्बुजदास्यम्॥७॥

इन्द्रियनामक-चौरगणै-
र्हृत-तत्त्वविवेक-महाधनराशिं
संसृतिजाल-निपातितमेव
महाबलिभिश्च विखण्डितकायम्।
त्वत्पदपद्म-मनुत्तममाश्रित-
माशु कपीश्वर ! पाहि कृपालो !
त्वां भजतो मम देहि दयाघन !
हे हनुमत्! स्वपदाम्बुजदास्यम्॥८॥

ब्रह्म-मरुद्गण-रुद्र-महेन्द्र-
किरीट-सुकोटि-लसत्पदपीठं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

दाशरथिं जपति क्षितिमण्डल-
एष निधाय सदैव हृदब्जे ।
तस्य हनूमत एव शिवङ्कर-
मष्टकमेतदनिष्टहरं वै
यः सततं हि पठेत् स नरो
लभतेऽच्युत-रामपदाब्ज-निवासम्॥९॥

इति श्रीमधुसूदनाश्रम-शिष्याच्युत-विरचितम् आचार्य-पण्डितश्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिसंस्कृतं च हनुमदष्टकं सम्पूर्णम् ।

*

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

सङ्कष्टमोचनस्तोत्रम्

सिन्दूर-पूर-रुचिरो बल-वीर्य-सिन्धु-
बुद्धिप्रभाव-निधिरद्भुत-वैभवश्रीः ।
दीनार्तिदाव-दहनो वरदो वरेण्यः
सङ्कष्टमोचन-विभुस्तनुतां शुभं नः॥१॥
सोत्साह-लङ्घित-महार्णव-पौरुषश्री-
र्लङ्कापुरी-प्रदहन-प्रथित-प्रभावः ।

काशीपीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्रीमहेश्वरानन्दजी सरस्वती द्वारा रचित यह सिद्ध सङ्कटमोचन स्तोत्र सर्व-सिद्धि-प्रदायक है। श्रद्धा-भक्तिपूर्वक नित्यप्रति इसके पाठ से मारुतिनन्दन भगवान् संकटमोचन शीघ्र ही प्रसन्न होकर दर्शन देते हैं और पाठकर्ता की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

घोराहव-प्रमथितारि-चमूप्रवीरः
प्राभञ्जनिर्जयति मर्कट-सार्वभौमः॥ २॥

द्रोणाचलानयन-वर्णित-भव्यभूतिः
श्रीराम-लक्ष्मण-सहायक-चक्रवर्ती।

काशीस्थ-दक्षिण-विराजित-सौधमल्लः
श्रीमारुतिर्विजयते भगवान् महेशः॥ ३॥

नूनं स्मृतोऽपि दयते भजतां कपीन्द्रः
सम्पूजितो दिशति वाञ्छित-सिद्धिवृद्धिम्।

सम्मोदकप्रिय उपैति परं प्रहर्षं
समायण-श्रवणतः पठतां शरण्यः॥ ४॥

श्रीभारत-प्रवर-युद्धरथोद्धत-श्रीः
पार्थैक-केतन-कराल-विशालमूर्त्तिः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

उच्चैर्घनाघन-घटा-विकटा-ऽट्टहासः
श्रीकृष्णपक्ष-भरणः शरणं ममाऽस्तु॥५॥
जङ्घालजङ्घ उपमातिविदूरवेगो
मुष्टि-प्रहार-परिमूर्च्छित-राक्षसेन्द्रः ।
श्रीरामकीर्तित-पराक्रमणोद्धवश्रीः
प्राकम्पनि-र्विभुरुदञ्चतु भूतये नः ॥६॥
सीतार्ति-दारणपटुः प्रबलः प्रतापी
श्रीराघवेन्द्र-परिरम्भवर-प्रसादः ।
वर्णीश्वरः सविधि-शिक्षित-कालनेमिः
पञ्चाननोऽपनयतां विपदोऽधिदेशम्॥७॥
उद्यद्-भानुसहस्र-सन्निभतनुः पीताम्बरालङ्कृतः
प्रोज्ज्वालानल-दीप्यमान-नयनो
निष्पिष्ट-रक्षोगणः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

संवर्तोद्यत-वारिदोद्धत-रवः प्रोच्चैर्गदाविभ्रमः
श्रीमान् मारुतनन्दनः प्रतिदिनं
ध्येयो विपद्-भञ्जनः ॥८॥
रक्षःपिशाचभय-नाशनमामयाधि-
प्रोच्चैर्ज्वरापहरणं दमनं रिपूणाम् ।
सम्पत्ति-पुत्रकरणं विजयप्रदानं
सङ्कष्टमोचनविभोः स्तवनं नराणाम्॥९॥
दारिद्र्य-दुःख-दहनं विजयं विवादे
कल्याण-साधनममङ्गल-वारणं च ।
दाम्पत्य-दीर्घसुख-सर्वमनोरथाप्तिं
श्रीमारुतेः स्तव-शतावृतिरातनोति॥१०॥
स्तोत्रं य एतदनुवासरमस्तकामः
श्रीमारुतिं समनुचिन्त्य पठेत् सुधीरः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

तस्मै प्रसादसुमुखो वरवानरेन्द्रः
साक्षात्कृतो भवति शाश्वतिकः सहायः ॥११॥
सङ्कष्टमोचनस्तोत्रं शङ्कराचार्यभिक्षुणा ।
महेश्वरेण रचितं मारुतेश्चरणेऽर्पितम् ॥१२॥

इति काशीपीठाधीश्वर-जगद्गुरुशङ्कराचार्य-
स्वामि-श्रीमहेश्वरानन्द-सरस्वती-विरचितं
सङ्कष्टमोचनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

*

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

हनुमत्स्तुतिः

आञ्जनेयमतिपाटलाननं
काञ्चनाद्रि-कमनीय-विग्रहम् ।
पारिजात-तरुमूल-वासिनं
भावयामि पवमाननन्दनम् ॥१॥

गोष्पदी-कृत-वारीशं मशकीकृत-राक्षसम् ।
रामायण-महामाला-रत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥२॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं
यः शोक-वह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS M

मनोजवं मारुततुल्य-वेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥४॥

यत्र-यत्र रघुनाथ-कीर्तनं
तत्र-तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारि-परिपूर्ण-लोचनं
मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥५॥

अञ्जनी-नन्दनं वीरं जानकीशोक-नाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥६॥

अतुलित-बलधामं स्वर्ण-शैलाभदेहं
दनुजवन-कशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकल-गुण-निधानं वानराणामधीशं
रघुपति-वर-दूतं वातजातं नमामि॥७॥

इति हनुमत्स्तुतिः समाप्ता ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

हनुमद्-वडवानलस्तोत्रम्

सङ्कल्पः

ॐ अस्य श्रीहनुमान् वडवानलस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, श्रीवडवानलहनुमान् देवता, मम समस्त-रोग-प्रशमनार्थम् आयुरारोग्यैश्वर्याऽभिवृद्ध्यर्थं समस्त-पापक्षयार्थं सीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं च हनुमद्-वडवानलस्तोत्रजपमहं करिष्ये।

यह वडवानल स्तोत्र सर्वसिद्धि प्रदायक है। इसके पाठ से मनुष्य की सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं। अतः सर्वप्रथम हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य श्रीहनुमान् वडवानलस्तोत्रमन्त्रस्य०' पढ़कर संकल्प करे। पश्चात् 'ॐ हां हीं ॐ नमो भगवते०' से आरम्भ कर 'हुं फट् स्वाहा' तक का पाठ करना चाहिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-M

ध्यानम्

मनोजवं मारुत-तुल्य-वेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथ-मुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

ॐ हां हीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते प्रकटपराक्रम सकलदिङ्मण्डल-यशोवितानधवलीकृत-जगत्-त्रितय-वज्रदेह रुद्रावतार लङ्कापुरीदहन उमाअर्गलमन्त्र उदधिबन्धन दशशिरःकृतान्तक सीताश्वसन वायुपुत्र-अञ्जनीगर्भसम्भूत श्रीरामलक्ष्मण-णानन्दकर कपिसैन्यप्राकार सुग्रीवसाह्यरण-पर्वतोत्पाटन कुमारब्रह्मचारिन् गभीरनाद सर्वपाप-ग्रहवारण-सर्वज्वरोच्चाटन डाकिनी-विध्वंसन ॐ हां हीं ॐ नमो भगवते महावीरवीराव सर्वदुःखनिवारणाय ग्रहमण्डल-सर्वभूत-मण्डल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

सर्वपिशाचमण्डलोच्चाटन-भूतज्वर-एकाहिकज्वर-द्व्याहिकज्वर-त्र्याहिकज्वर-चातुर्थिकज्वर-सन्ताप-ज्वर-विषमज्वर-तापज्वर-माहेश्वर-वैष्णवज्वरान् छिन्धि छिन्धि यक्ष-ब्रह्मराक्षस-भूत-प्रेत-पिशाचान् उच्चाटय उच्चाटय ।

ॐ हां श्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः आं हां हां हां हां ॐ सौं एहि एहि एहि ॐ हं ॐ हं ॐ हं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते श्रवणचक्षुर्भूतानां शाकिनीडाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वविषं हर हर आकाशभुवनं भेदय भेदय छेदय छेदय मारय मारय शोषय शोषय मोहय मोहय ज्वालय ज्वालय प्रहारय प्रहारय सकलमायां भेदय भेदय ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-M

ॐ हां हीं ॐ नमो भगवते महाहनुमते सर्वग्रहोच्चाटन परबलं क्षोभय क्षोभय सकलबन्धन-मोक्षणं कुरु कुरु शिरःशूल-गुल्मशूल-सर्वशूला-न्निर्मूलय निर्मूलय नागपाशानन्त-वासुकि-तक्षक-कर्कोटकालियान् यक्षकुलजगत्-रात्रिञ्चर-दिवाचर-सर्पान्निर्विषं कुरु कुरु स्वाहा ।

राजभय-चोरभय-परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्र-परविद्याश्छेदय छेदय स्वमन्त्र-स्वयन्त्र-स्वतन्त्रका-विद्याः प्रकटय प्रकटय सर्वारिष्टान्नाशय नाशय सर्वशत्रून्नाशय नाशय असाध्यं साधय साधय हुँ फट् स्वाहा ।

इति विभीषणकृतं हनुमद्-वडवानलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

श्रीहनुमते नमः

श्री बजरंग बाण

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

चौपाई

जय हनुमन्त सन्त हितकारी।
सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी॥१॥

श्रद्धा-भक्ति से गोस्वामी तुलसीदास कृत इस बजरङ्ग बाण के नित्य प्रति पाठ करने से मनुष्य के सभी कष्ट तथा भूत, प्रेत आदि बाधाएँ दूर होती हैं। एवं युद्ध, यात्रा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoS-M

जन के काज विलम्ब न कीजै ।
आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥२॥
जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा ।
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥३॥
आगे जाइ लंकिनी रोका ।
मारेहु लात गई सुरलोका ॥४॥
जाय विभीषण को सुख दीन्हा ।
सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥५॥
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा ।
अति आतुर यम कातर तोरा ॥६॥

परीक्षा, इण्टरव्यू आदि में विशेष सफलता प्राप्त होती है। मंगलवार तथा शनिवार को ११ पाठ करना विशेष लाभप्रद है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

अक्षय कुमार को मारि संहारा ।
लूम लपेट लंक को जारा ॥७॥
लाह समान लंक जरि गई ।
जय-जय धुनि सुरपुर महँ भई ॥८॥
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी ।
कृपा करहु प्रभु अन्तरयामी ॥९॥
जय-जय लक्ष्मण प्राण के दाता ।
आतुर होइ दुख करहु निपाता ॥१०॥
जय गिरधर जय-जय सुख-सागर ।
सुर-समूह समरथ भटनागर ॥११॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले ।
बैरिहिं मारु बज्र के कीले ॥१२॥
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो ।
महाराज प्रभु दास उबारो ॥१३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-M

ॐकार हुंकार महाबीर धावो ।
बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥१४॥
ॐ हीं हीं हीं हनुमन्त कपीशा ।
ॐ हुँ हुँ हुँ हनु अरि उर शीशा ॥१५॥
सत्य होहु हरि शपथ पाय के ।
रामदूत धरु मारु जाय के ॥१६॥
जय-जय-जय हनुमन्त अगाधा ।
दुख पावत जन केहि अपराधा ॥१७॥
पूजा जप-तप नेम अचारा ।
नहिं जानत हौं दास तुम्हारा ॥१८॥
बन-उपवन मग गिरि गृह माहीं ।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥१९॥
पाँय परौं कर जोरि मनावौं ।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥२०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

जय अंजनिकुमार बलवन्ता ।
शंकर सुवन वीर हनुमन्ता ॥२१॥
बदन कराल काल कुल घालक ।
राम सहाय सदा प्रति पालक ॥२२॥
भूत प्रेत पिशाच निशाचर ।
अग्नि बैताल काल मारीमर ॥२३॥
इन्हैं मारु तोहिं शपथ राम की ।
राखु नाथ मरज़ाद नाम की ॥२४॥
जनकसुता हरिदास कहावो ।
ताकी शपथ विलम्ब न लावो ॥२५॥
जय-जय-जय धुनि होत अकाशा ।
सुमिरत होत दुसह दुख नाशा ॥२६॥
शरण-शरण कर जोरि मनावौं ।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥२७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

उठु - उठु चलु तोहिं राम दोहाई ।
पाँय परौं कर जोरि मनाई ॥२८॥
ॐ चं चं चं चं चपल चलन्ता ।
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥२९॥
ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल ।
ॐ सं सं सहमि पराने खलदल ॥३०॥
अपने जन को तुरत उबारो ।
सुमिरत होय आनन्द हमारो ॥३१॥
यह बजरंग बाण जेहिं मारे ।
ताहि कहो फिरि कौन उबारे ॥३२॥
पाठ करै बजरंग बाण की ।
हनुमत रक्षा करैं प्राण की ॥३३॥
यह बजरंग बाण जो जापै ।
तेहि ते भूत प्रेत सब काँपै ॥३४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

धूप देय और जपे हमेशा।
ताके तन नहिं रहे कलेशा ॥३५॥

दोहा

प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजे, सदा धरैं उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

इति श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत
हनुमत् बजरङ्ग बाण समाप्त।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

हनुमान-साठिका

चौपाई

जय जय जय हनुमान अडंगी ।
महावीर विक्रम बजरंगी ॥१॥
जय कपीश जय पवनकुमारा ।
जय जगबन्दन शील अगारा ॥२॥

प्रतिदिन हनुमान-साठिका के पाठ से पाठक संकटमुक्त होकर उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। मंगलवार का पाठ तो विशेष सिद्धिप्रद है। जैसा कि साठिका के अन्त में सन्त तुलसीदास जी ने कहा है-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

जय आदित्य अमर अविकारी ।
अरि मरदन जय जय गिरधारी ॥३॥
अंजनि उदर जन्म तुम लीन्हा ।
जय-जयकार देवता कीन्हा ॥४॥
बाजै दुन्दुभि गगन गभीरा ।
सुर मन हर्ष असुर मन पीरा ॥५॥
कपि के डर गढ़ लंक सकानी ।
छूटी बन्दि देवतन जानी ॥६॥
ऋषि समूह निकट चलि आये ।
पवन-तनय के पद सिर नाये ॥७॥
बार-बार अस्तुति करि नाना ।
निर्मल नाम धरा हनुमाना ॥८॥

'जो नित पढ़े यह साठिका, तुलसी कहैं विचारि ।
रहै न संकट ताहि को, साक्षी हैं त्रिपुरारि ॥'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सकल ऋषिन मिलि अस मत ठाना ।
दीन बताय लाल फल खाना ॥९॥
सुनत वचन कपि मन हर्षाना ।
रविरथ उदय लाल फल जाना ॥१०॥
रथ समेत कपि कीन अहारा ।
सूर्य बिना भये अति अँधियारा ॥११॥
विनय तुम्हार करें अकुलाना ।
तब कपीश की अस्तुति ठाना ॥१२॥
सकल लोक वृत्तान्त सुनावा ।
चतुरानन तब रवि उगिलावा ॥१३॥
कहा बहोरि सुनो बलशीला ।
रामचन्द्र करि हैं बहु लीला ॥१४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

तब तुम उन कर करब सहाई ।
अबहीं बसहु कानन में जाई॥१५॥
अस कहि विधि निजलोक सिधारा ।
मिले सखा संग पवनकुमारा ॥१६॥
खेलैं खेल महा तरु तोरैं ।
ढेर करैं बहु पर्वत फोरैं ॥१७॥
जेहि गिरिचरण देहि कपि धाई ।
गिरि समेत पातालहिं जाई ॥१८॥
कपि सुग्रीव बालि की त्रासा ।
निरखत रहे राम मगु आसा ॥१९॥
मिले राम तहँ पवन कुमारा ।
अति आनन्द सप्रेम दुलारा ॥२०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS M

मणि मुँदरी रघुपति सों पाई ।
सीता खोज चले सिर नाई ॥२१॥
शत योजन जलनिधि विस्तारा ।
अगम अपार देवतन हारा ॥२२॥
जिमि सर गोखुर सरिस कपीशा ।
लाँघि गये कपि कहि जगदीशा ॥२३॥
सीता चरण सीस तिन नाये ।
अजर-अमर के आशिष पाये ॥२४॥
रहे दनुज उप्पवन रखवारी ।
एक-से-एक महाभट भारी ॥२५॥
तिन्हैं मारि पुनि कहेउ कपीशा ।
दहेउ लंक कोप्यो भुज बीसा ॥२६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

सिया बोध दै पुनि फिर आये ।
रामचन्द्र के पद सिर नाये ॥२७॥
मेरु उपारि आपु छिन माहीं ।
बाँधे सेतु निमिष इक माहीं ॥२८॥
लक्ष्मण शक्ति लागी जबहीं ।
राम बुलाय कहा पुनि तबहीं ॥२९॥
भवन समेत सुखेण ले आये ।
तुरत सजीवन को पुनि धाये ॥३०॥
मग महँ कालनेमि कहँ मारा ।
अमित सुभट निशिचर संहारा ॥३१॥
आनि सजीवन गिरि समेता ।
धरि दीन्हों जहँ कृपा निकेता ॥३२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

फनपति केर शोक हरि लीना ।
वर्षि सुमन सुर जय-जय कीना ॥३३॥
महिरावण हरि अनुज समेता ।
लै गयो तहाँ पाताल निकेता ॥३४॥
जहाँ रहै देवी अस्थाना ।
दीन चहै बलि काढ़ि कृपाना ॥३५॥
पवन-तनय प्रभु कीन गुहारी ।
कटक समेत निशाचर मारी ॥३६॥
रीछ कीशपति सबै बहोरी ।
राम लखन कीने यक ठोरी ॥३७॥
सब देवतन की बन्दि छुड़ाये ।
सो कीरति मुनि नारद गाये ॥३८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

अक्षय कुमार दनुज बलवाना ।
सानकेतु कहँ सब जग जाना ॥३९॥
कुम्भकरण रावण कर भाई ।
ताहि निपात कीन्ह कपि राई ॥४०॥
मेघनाद पर शक्ती मारा ।
पवन-तनय तब सों बरियारा ॥४१॥
रहा तनय नारान्तक जाना ।
पल महँ ताहि हते हनुमाना ॥४२॥
जहँ लगि मान दनुज कर पावा ।
पवन-तनय सब मारि नसावा ॥४३॥
जय मारुत-सुत जय अनुकूला ।
नाम कृशानु शोक सम तूला ॥४४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-M

जहँ जीवन पर संकट होई ।
रवि तम सम सो संकट खोई ॥४५॥
बन्दि परै सुमिरै हनुमाना ।
संकट कटै धरै जो ध्याना ॥४६॥
जाको बाँध बाम पद दीन्हा ।
मारुतसुत ब्याकुल बहु कीन्हा ॥४७॥
सो भुजबल का कीन कृपाला ।
आछत तुम्हें मोर यह हाला ॥४८॥
आरत हरन नाम हनुमाना ।
सादर सुरपति कीन बखाना ॥४९॥
संकट रहै न एक रती को ।
ध्यान धरे हनुमान जती को ॥५०॥
धावहु देखि दीनता मोरी ।
कहौं पवनसुत युग कर जोरी ॥५१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

कपिपति बेगि अनुग्रह करहू ।
आतुर आइ दुसह दुख हरहू ॥५२॥
राम शपथ मैं तुमहिं सुनाया ।
जवन गुहार लाग सिय जाया ॥५३॥
पैज तुम्हार सकल जग जाना ।
भव-बन्धन भंजन हनुमाना ॥५४॥
यह बन्धन कर केतिक बाता ।
नाम तुम्हार जगत सुखदाता ॥५५॥
करौ कृपा जय-जय जगस्वामी ।
बार अनेक नमामि नमामी ॥५६॥
भौमवार कर होम विधाना ।
धूप दीप नैवेद्य सुजाना ॥५७॥
मंगल दायक को लौ लावै ।
सुर नर मुनि वांछित फल पावै ॥५८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-M

जयति जयति जय जय जगस्वामी ।
समरथ पुरुष सुअन्तर यामी ॥५९॥
अंजनि तनय नाम हनुमाना ।
सो तुलसी के प्राण समाना ॥६०॥

दोहा

जय कपीश सुग्रीव तुम, जय अंगद हनुमान ।
राम लषन सीता सहित, सदा करौ कल्यान ॥१॥
बन्दौं हनुमत नाम यह, भौमवार परमान ।
ध्यान धरै नर निश्चय, पावै पद कल्यान ॥२॥
जो नित्त पढ़ै यह साठिका, तुलसी कहैं विचारि ।
रहै न संकट ताहि को, साक्षी हैं त्रिपुरारि ॥३॥

इति हनुमान-साठिका समाप्त ।

*

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

श्रीहनुमानचालीसा

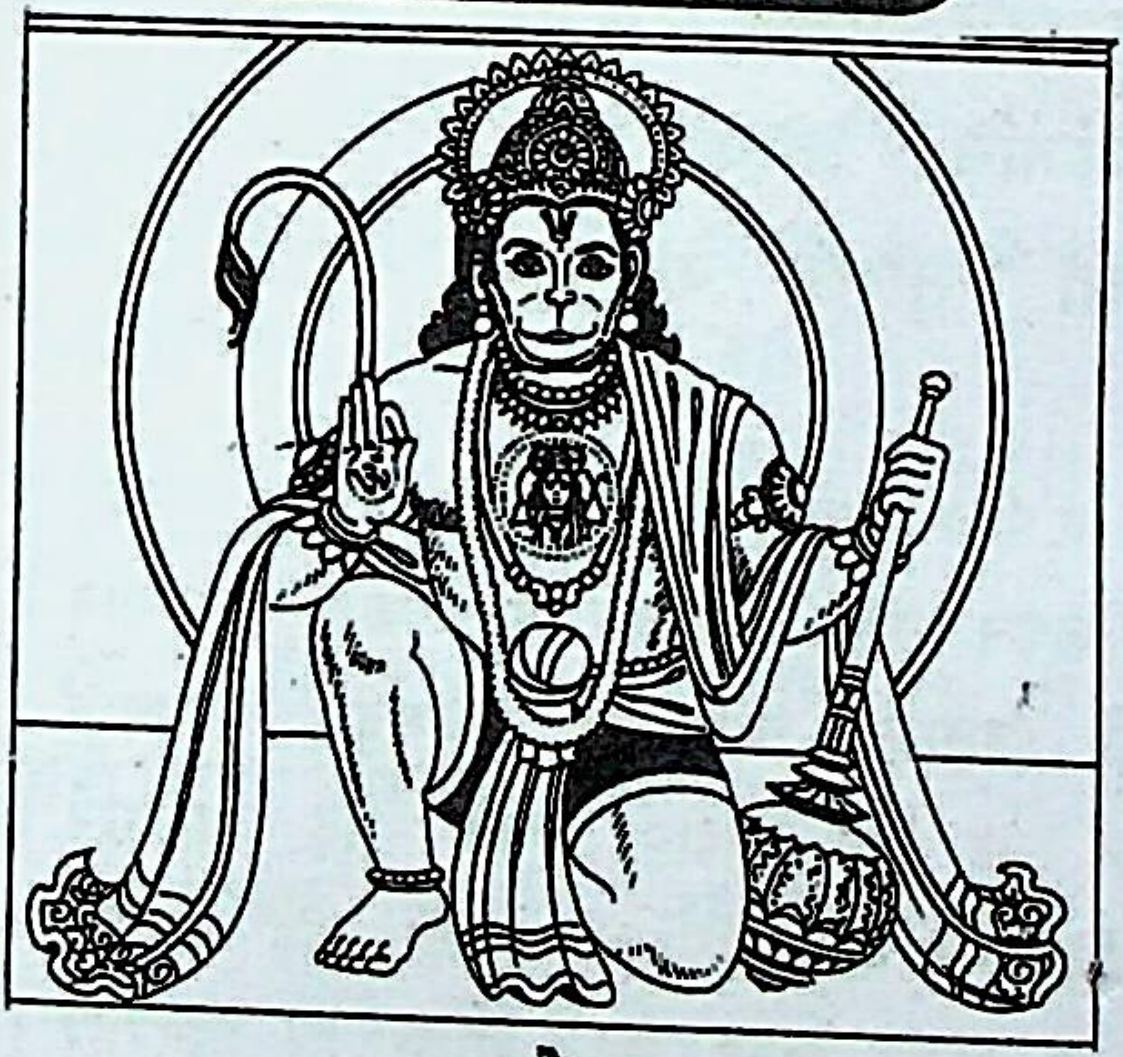

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज
निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु
जो दायकु फल चारि ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौं पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं,
हरहु कलेस विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर विक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केशरीनंदन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लषन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS Mo

लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ॥
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-MK

तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना ।
लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥

जुग सहस्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रक्षक काहू को डरना ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-Mo

आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोइ लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding-IKS-M

चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

दोहा

पवनतनय संकट हरन,
मंगल मूरति रूप।
राम लषन सीता सहित,
हृदय बसहु सुर भूप॥

इति।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रबि भक्षि लियो तब
तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को
यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी विनती तब
छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-Mo

को नहिं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो॥१॥
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि
जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि शाप दियो तब
चाहिय कौन बिचार बिचारो।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु
सो तुम दास के सोक निवारो॥को०-२॥
अंगद के संग लेन गये सिय
खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु
बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding JKS-M

हेरि थके तट सिंधु सबै तब
लाय सिया-सुधि प्रान उबारो॥को०-३॥
रावन त्रास दई सिय को सब
राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु
जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु
दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो॥को०-४॥
बान लग्यो उर लछिमन के तब
प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत
तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

आनि सजीवन हाथ दई तब
लछिमन के तुम प्रान उबारो ॥को०-५॥
रावन जुद्ध अजान कियो तब
नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल
मोह भयो यह संकट भारो ।
आनि खगेस तबै हनुमान जु
बंधन काटि सुत्रास निवारो ॥को०-६॥
बंधु समेत जबै अहिरावन
लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि
देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

जाय सहाय भयो तब ही
अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ॥को०-७॥
काज किये बड़ देवन के तुम
बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीबन को
जो तुमसों नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु
जो कछु संकट होय हमारो ॥को०-८॥

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर ।
बज्र देह दानवदलन, जय जय जय कपि सूर ॥

इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ।

*

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

हनुमान चालीसा का सम्पुट पाठ-विधान

किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए श्रीहनुमान चालीसा का सम्पुट पाठ विशुद्ध मन से संकल्प पूर्वक करना चाहिये। पाठ किसी मन्दिर या एकान्त स्थान में हनुमानजी का चित्र (फोटो) सामने रख कर करें। सामान्यतः जब तक कार्य सिद्ध न हो जाय, तब तक एक सम्पुट पाठ नित्य करना चाहिए।

शीघ्र फल-प्राप्ति हेतु ११ सम्पुट पाठ प्रतिदिन करें। यह प्रयोग चालीस दिन का है। सम्पुट पाठ की चौपाइयाँ इस प्रकार हैं–

१–कुमति नाश एवं सुमति प्राप्ति के लिये–

महाबीर विक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

२– बल, बुद्धि और विद्या की प्राप्ति तथा मनोविकार दूर करने के लिये–

बुद्धिहीन तनु जानिकै,
सुमिरौं पवन कुमार ।
बल बुधि विद्या देहु मोहि,
हरहु कलेस बिकार ॥

३–कठिन रोगों से मुक्ति के लिये–

राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥
लाय सजीवन लषन जियाये ।
श्रीरघुवीर हरषि उर लाये ॥

अथवा

नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

श्रीहनुमान्‌जी की आरती

आरति कीजै हनुमान लला की ।
दुष्टदलन रघुनाथ कला की ॥
जाके बल से गिरिवर काँपै ।
रोग-दोष जाके निकट न झाँकै ॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई ।
संतन के प्रभु सदा सहाई ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये ।
लंका जारि सिया सुधि लाये ॥
लंका सो कोट समुद्र-सी खाई ।
जात पवनसुत बार न लाई ॥
लंका जारि असुर संहारे ।
सियारामजी के काज सँवारे ॥
लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े सकारे ।
आनि सजीवन प्रान उबारे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS-M

पैठि पताल तोरि जम-कारे ।
अहिरावन की भुजा उखारे ॥
बायें भुजा असुर दल मारे ।
दहिने भुजा संतजन तारे ॥
सुर नर मुनि आरती उतारें ।
जै जै जै हनुमान उचारें ॥
कंचन थार कपूर लौ छाई ।
आरति करत अंजना माई ॥
जो हनुमान (जी) की आरती गावै ।
वसि बैकुंठ परम पद पावै ॥

इति हनुमत्-आरती समाप्त।

पुस्तक प्राप्ति-स्थान

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

lic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

हमारे यहाँ की प्रकाशित पुस्तकें मंगाकर लाभ उठावें

मानसागरी भा.टी.	100.00	यज्ञ मंत्र संग्रह भा.टी.	200.00
भावकुतूहल भा.टी.	75.00	प्रभुविद्याप्रतिष्ठार्णव भा.टी.	
बृहज्जातकसार भा.टी.	75.00	(सर्वदेवप्रतिष्ठासमूख)	200.00
जातकाभरणम् भा.टी.	80.00	ग्रहशान्ति पद्धति भा.टी.	75.00
कर्मविपाक संहिता भा.टी.	80.00	विधानप्रकाश भा.टी.	75.00
लग्नचन्द्रिका भा.टी.	40.00	दुर्गार्चन पद्धति भा.टी.	100.00
ताजिक नीलकण्ठी भा.टी.	75.00	मन्त्र सागर भा.टी.	75.00
शीघ्रबोध भा.टी.	20.00	हनुमद्-रहस्य भा.टी.	60.00
स्त्रीजातकम् भा.टी.	25.00	गायत्री रहस्य	80.00
मुहूर्त चिन्तामणि भा.टी.	60.00	रसराजमहोदधि पाँचों भाग	150.00

हर प्रकार की धार्मिक पुस्तकों के मिलने का एकमात्र स्थान

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh